



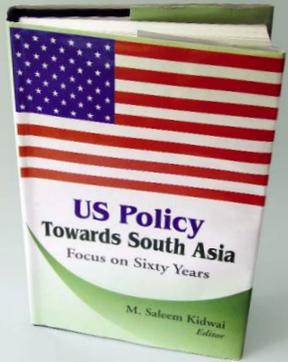
एस.एम. गोयल अजमेर, राजस्थान
 “अनिश्चित सत्य” में हालांकि किसी सटीक परिदृश्य की परिकल्पना नहीं की गई है लेकिन एक सत्य साफ तौर पर दिखलाई देता है। वाहनों, कारखानों और घरेलू उपकरणों की संख्या में जबर्दस्त बढ़ोतरी के चलते वायुमंडल में हानिकारक गैसों की मात्रा इस कदर बढ़ जाएगी कि हमारा जीवन ही मुश्किल में पड़ जाएगा। मानव खुद को शिक्षित और संपन्न समझता है लेकिन वह अपनी अज्ञानता के कारण मौसम को इस तरह से प्रभावित कर रहा है कि वातावरण हमारे स्वास्थ्य के लिए ही लाभकारी नहीं रहेगा। वैसे यह सही है कि सृष्टि के रचियता को ही मालूम है कि कब, क्या, कहां और क्यों किया जाए।

विजयलक्ष्मी श्रीवास्तव गांधीनगर, गुजरात
 “प्रकृति के नक्षत्रोत्सव पर” लेख ज्ञानवर्द्धक और विचारोत्तेजक था और यह मुझे सबसे ज्यादा पसंद आया। प्रकृति के नियमों के अनुरूप ढलकर और प्राकृतिक उत्पादों को अपनाकर ही हम पर्यावरण संतुलन कायम रखने की दिशा में बढ़ सकते हैं।

ब्रजेन्द्र कुमार सिंह कोडरमा, झारखंड
 “बच्चे बन सकते हैं बड़े लीडर” मुझे सर्वाधिक पसंद आया। जिन मुद्दों और समस्याओं को बड़े लोग नजरअंदाज कर देते हैं, उन समस्याओं को हल करने के लिए बच्चे सामने आएँ, यह प्रशंसा की बात है। स्पैन का इस बार का आवरण यह दर्शाता है कि मानव सभ्यता किस भयावहता की ओर जा रही है। स्पैन से हमें यह जानने को मिलता है कि अमेरिका किस तरह अन्य देशों में समाज के लिए उपयोगी कार्यक्रम चला रहा है। मानवाधिकार से संबंधित ज्वलंत मुद्दों पर भी सामग्री दें, तो अच्छा लगेगा।

सलीम किदवई नई दिल्ली
 एक फुलब्राइट अध्येता होने के नाते मैंने “सांस्कृतिक दूत: भारत में फुलब्राइट का असर” बेहद दिलचस्पी के साथ पढ़ा। इस कार्यक्रम के कारण दुनिया के विभिन्न देशों के लोगों में करीबी और स्थायी संबंध विकसित हुए हैं। फुलब्राइट संपर्कों के कारण मुझे दुनिया के बहुत से देशों में शैक्षिक कार्यक्रमों में हिस्सेदारी करने का मौका मिला है। मेरी मां की मृत्यु होने पर फुलब्राइट अध्येता समुदाय ने अपने संदेश भेजे और मेरे दुख को बांटने का प्रयास किया। उन्होंने मेरे शैक्षिक कार्य को भी सराहा। “मुस्लिम दुनिया तक सीधी पहुंच” नामक फुलब्राइट कार्यक्रम में भागीदारी के बाद जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विद्यालय के तहत एक नया पाठ्यक्रम “अमेरिका और मुस्लिम विश्व” शुरू किया गया। फुलब्राइट कार्यक्रम वास्तव में उपयोगी कार्यक्रम है जिससे मेरे जैसे शोधार्थियों में बड़ी तब्दीली आती है।

संपादक की ओर से: सलीम किदवई की पुस्तक यू.एस. पॉलिसी टुवर्ड्स साउथ एशिया: फ़ोकस ऑन सिक्सटी इयर्स नई दिल्ली में अप्रैल में जारी की गई।



अंजनी रस्तोगी बदायूं, उत्तर प्रदेश
 यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि अमेरिका में महिला मतदाता जागरूक हैं और अब राजनीति में भी अपनी छाप छोड़ रही हैं। अमेरिका में महिलाओं द्वारा पुरुषों के मुकाबले ज्यादा मतदान करना और यह मानना कि यही राजनीति में बदलाव का सबसे अच्छा तरीका है, भारत जैसे देश की महिलाओं के लिए प्रेरणा का काम कर सकता है। मतदान प्रक्रिया के साथ ही अमेरिका में उद्योग जगत में महिलाएं बेहद सक्रिय हैं और भारत की महिलाओं को भी इससे सीख लेने की जरूरत है।

इंद्रभानु गौड नई दिल्ली
 इस बार स्पैन में “अनिश्चित सत्य,” “मानवाधिकार: फूलों से खिल सकते हैं चेहरे,” और “शिकागो की अद्भुत इमारतें” लेख अच्छे लगे। लेकिन इस बार का आवरण आम आदमी की समझ से परे है।



विनोद सोनी पानीपत, हरियाणा
 भारत में मलेरिया के खतरे के प्रति सचेत करता लेख “मलेरिया के खिलाफ जंग” और जलवायु परिवर्तन के बारे में जानकारी पसंद आई। शिकागो की अद्भुत इमारतों का वर्णन करता लेख भी अच्छा लगा। “कागज, प्लास्टिक या कुछ और” लेख से इस बात का संदेश मिला कि हमें अपने खरीददारी के थैलों को भी पर्यावरण अनुकूल बनाने की जरूरत आ पड़ी है।



सरला वाजपेयी नागौर, राजस्थान
 सभी लेख अच्छे और प्रेरक लगे लेकिन सूफी कवि रूमी से संबंधित सामग्री विशेष रूप से पसंद आई। वर्तमान में अमेरिका समेत पूरा विश्व जिस उदार

मानवीयता के विकास को महत्व दे रहा है, उसे रूमी की कविताओं से बल मिलेगा। इस बार का आवरण विश्वव्यापी तापमान वृद्धि की समस्या को प्रभावशाली तरीके से अंकित करता है जो इन दिनों ज्वलंत समस्या बनी हुई है।